धान की सीधी बुआई में ध्यान रखने वाली बाते

डॉ. राजीव कुमार एवं डॉ. विचित्र कुमार आर्य

सहायक प्रोफेसर, मदरहुड विश्वविधालय, रूड़की

खेती की बढ़ती लागत और घटती लेबर को देखते हुऐ, धान की सीधी बुआई आवश्यक हो गयी है। धान की सीधी बुआई ज्यादातर भूमियों में की जा सकती है। बलुई दोमट से भारी चिकनी मिट्टी ज्यादा उप्युक्त मानी जाती है।

कैसे करे खेत की तैयारी

सर्वप्रथम खेत की एक या दो जुताई कर लेज़र लैंड लेवलर की मदद से खेत को समतल करना अत्यन्त आवश्यक है। समतल कर खेत की एक जुताई कर पाटा लागा लेना चाहिये। इसके बाद सिंचाई कर बताऊ आने पैर हल्की जुताई करके खेत को तैयार कर लेना चाहिये फिर सीड कम फ़र्टिलाइज़र जीरो टिल से धान की सीधी बुआई करे।

बुआई का उप्युक्त समय

बुआई का उप्युक्त समय 20 मई से 25 जून तक होता है। 25 जून के बाद बुआई करना से जोखिम रहता है। देर से बुआई करने पर चिकनी मिट्टी में भारी बारिश होने पर बुआई एवं जर्मिनेशन प्रभावित हो सकता है इस लिये 25 जून तक बुआई समाप्त कर देनी चाहिये।

उन्नत प्रजातियाँ

बासमती धान की किस्म पूसा-1509 ने प्रदेश के किसानों लाभान्वित किया है, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब के किसानों की सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली प्रजाति है। इसके साथ ही पूसा -1121 एवं पी० बी० -1 की बुआई भी की जा रही है। संकर प्रजाति एराइस -6444, एराइस -6129, पी० ए० सी० 837 धान की सीधी बुआई के लिये सभी प्रजाति उप्युक्त है।

बुआई की विधि

धान की सीधी बुआई में सूखे खेत में धान की बुआई के बाद जर्मिनेशन के लिए हल्की सिचाई करनी अत्यन्त आवश्यक है। बताऊ खेत में बुआई करने के लिए बुआई से पहले सिंचाई करनी चाहिये, खेत की कंडीशन (बताऊ) आने पर सीड कम फ़र्टिलाइज़र जीरो टिल से बुआई कर देते है। धान की सीधी बुआई करते समय 2-3 सेमी० गहराई रखनी चाहिये।

बीज दर

धान की सीधी बुआई के लिये बासमती प्रजातियो एवं संकर प्रजातियो की बुआई कर सकते है। सीड कम फ़र्टिलाइज़र जीरो टिल मशीन से बुआई कारने के लिये बासमती प्रजातियो की बीज दर 25-35 किलोग्राम प्रति हे० तथा 15-20 किलोग्राम प्रति हे० संकर धान का प्रयोग करते है।

खरपतवार नियंत्रण

धान की सीधी बुआई के बाद दो से तीन दिन के अन्दर पेंडीमैथालीन 30 ई. सी. 3 लीटर 300 से 400 लीटर पानी में घोल कर एक हेक्टेयर में स्प्रे करना चाहिये। स्प्रे करते समय फ्लैट फैन नोजिल का प्रयोग करे। बुआई के 20-30 दिन बाद बिस्पाइरीबैक सोडियम 80 मिली के साथ पाईराजोसल्फ्युरान 60 ग्राम को 300 से 400 लीटर पानी में घोल कर एक हेक्टेयर में स्प्रे करना चाहिये।

धान में सिंचाई प्रबन्ध

धान की सीधी बुआई अगर सूखे खेत में की गयी है तो बुआई के तुरन्त बाद सिचाई करनी चाहिये। ढहान के बुआई गीले खेत में की गयी है तो जमाव के बाद बारिश नहीं होने पर हल्की सिचाई करते रहना चाहिए। धान की कुछ मुख्य अवस्था में बारिश नहीं होने सिचाई अति आवश्यक है जैसे

कल्ले बनते समय बुआई के 30-45 दिन की अवस्था और बाली निकलने से लेकर दाना भरने तक की अवस्था में खेत में नमी आवश्यक है। इन अवस्था में नमी ना होने पर पैदावार में गिरावट आती है। कटाई से 15-18 दिन पहले सिचाई बंद कर देनी चाहिये।

धान का तना छेदक

इस कीट की सूड़ी अवस्था ही क्षतिकर होती है। सबसे पहले अंडे से निकलने के बाद सूड़ियां मध्य कलिकाओं की पत्तियों में छेदकर अन्दर घुस जाती हैं और अन्दर ही अन्दर तने को खाती हुई गांठ तक चली जाती हैं। पौधों की बढ़वार की अवस्था में प्रकोप होने पर बालियां नहीं निकलती हैं। बाली वाली अवस्था में प्रकोप होने पर बालियां सूखकर सफ़ेद हो जाती हैं और दाने नहीं बनते हैं।

जिंक सल्फेट+बुझा हुआ चूना (100 ग्राम+ 50 ग्राम) प्रति नाली की दर से 15-20 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पौध रोपाई के समय पौधों के ऊपरी भाग की पत्तियों को थोड़ा सा काटकर रोपाई करें, जिससे अंडे नष्ट हो जाते हैं।

धान की गंधी बग

वयस्क लम्बा, पतले और हरे-भूरे रंग का उड़ने वाला कीट होता है। इस कीट की पहचान कीट से आने वाली दुर्गन्ध से भी कर सकते हैं। इसके व्यस्क और शिशु दूधिया दानों को चूसकर हानि पहुंचाते हैं, जिससे दानों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और दाने खोखले रह जाते हैं। यदि कीट की संख्या एक या एक से अधिक प्रति पौध दिखायी दे तो मालाथियान पांच प्रतिशत विष धूल की 500-600 ग्राम मात्रा प्रति नाली की दर से छिड़काव करें। खेत के मेड़ों पर उगे घास की सफाई करें क्योंकि इन्ही खरपतवारों पर ये कीट पनपते रहते हैं और दुग्धावस्था में फसल पर आक्रमण करते हैं। 10 प्रतिशत पत्तियां क्षतिग्रस्त होने पर केल्डान 50 प्रतिशत घुलनशील धूल का दो ग्राम/ली. पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

भूरी चित्ती रोग

इस रोग के लक्षण मुख्यतया पत्तियों पर छोटे- छोटे भूरे रंग के धब्बे के रूप में दिखाई देतें है। उग्र संक्रमण होने पर ये धब्बे आपस में मिल कर पत्तियों को सूखा देते हैं और बालियां पूर्ण रूप से बाहर नहीं निकलती हैं। इस रोग का प्रकोप धान में कम उर्वरता वाले क्षेत्रों में अधिक दिखाई देता है।

इस रोग के रोकथाम के लिए बुवाई से पहले बीज को ट्राईसाइक्लेजोल दो ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। पुष्पन की अवस्था में जरुरत पड़ने पर कार्बेन्डाजिम का छिड़काव करें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर 10-20 दिन के अन्तराल पर या बाली निकलते समय दो बार आवश्यकतानुसार कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील धूल की 15-20 ग्राम मात्रा को लगभग 15 ली पानी में घोल बनाकर प्रति नाली की दर से छिड़काव करें।

पर्णच्छाद अंगमारी

इस रोग के लक्षण मुख्यत: पत्तियों पर दिखाई देते हैं। संतुलित मात्रा में नत्रजन, फास्फोरस और पोटाश का प्रयोग करें। बीज को थीरम 2.5 ग्राम/किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करें। जुलाई महीने में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैकोजेब (0.24 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

आभासी कंड यह एक फफूंदीजनित रोग है। रोग के लक्षण पौधों में बालियों के निकलने के बाद ही स्पष्ट होते हैं। रोगग्रस्त दाने पीले से लेकर संतरे के रंग के हो जाते हैं जो बाद में जैतूनी- काले रंग के गोलों में बदल जाते हैं। फसल काटने के बाद अवशेषों को जला दें। खेतों में अधिक जलभराव नहीं होना चाहिए। रोग के लक्षण दिखाई देने पर प्रोपेकोनेजोल 20 मिली. मात्रा को 15-20 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति नाली की दर से छिड़काव करें।